चन्दामामा
माँ - बच्चों का मासिक पत्र
CHANDAMAMA

छाते और

बहुत पहले जमदग्नि नमक बड़े भारी तपस्वी रहते थे। वे और ऋषि-मुनियों की भाँति केवल तप करने में ही नहीं; अस्त्र-शस्त्र चलाने में भी बड़े चतुर थे। उनकी स्त्री का नाम था रेणुका।

जमदग्नि को तीर चलाने का बड़ा शौक था। वह रोज एक बड़े मैदान में जाकर तीर चलाने का अभ्यास करते। वे धनुष पर तीर चढ़ा कर छोड़ने जाते। रेणुका उन तीरों को खोज कर उठा लाती और पति के हाथों में दे देती।

एक दिन जमदग्नि रोज की तरह तीर चला रहे थे। तब तक दिन चढ़ आया था और धूप बड़ी तेज हो उठी थी। रेणुका छूटे हुए तीर लाने गई। पर जब बड़ी देर तक नहीं लौटी, तो मुनि के मन में चिन्ता हुई। वह उसे ढूँढने निकले। थोड़ी दूर जाने पर उन्होंने देखा कि रेणुका पैर घसीटती धीरे-धीरे आ रही है। धूप के कारण उसका सारा बदन कुम्हला गया है। पैरों में फफोले पड़ गए हैं और वह बड़े कष्ट से पैर उठा रही है।

यह देखकर मुनि को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने कहा -"ओह ! इस सूरज की इतनी हिम्मत कि वह मेरी स्त्री को कष्ट पहुँचाए ? क्या समझ रखा है इसने मुझे ? देख तो अभी मैं उसकी कैसी दुर्गत करता हूँ।" यह कहते हुए उन्होंने धनुष पर एक भयङ्कर तीर चढ़ा कर सूरज पर निशाना लगाया।

जमदग्नि का क्रोध देखकर सूरज एक ब्राह्मण बनकर पृथ्वी पर उतर आये और मुनि के सामने आकर कहने लगे -"मुनिवर ! आप यह क्या कर रहे हैं ? क्या आप भगवान सूरज को ही मार डालना चाहते हैं ? तो फिर

सुशीला देवी

जूते की कहानी

यह सारी दुनिया कैसे बचेगी ? सूरज की रोशनी के बिना लोग जिएँगे कैसे ? महान ज्ञानी होकर भी ऐसा कार्य करना क्या आपके लिए उचित है ?"

"ब्राह्मण देवता ! मुझे रोको मत। तुम नहीं जानते कि सूरज ने मेरे साथ कैसी धृष्टता की है। क्या तुम जानते हो कि उसने मेरी स्त्री को कितना सताया है। मैं उस दुष्ट को दण्ड दिए बिना नहीं रहूँगा।" जमदग्नि ने जवाब दिया। तब सूरज ने अपना असली रूप प्रकट किया और कहा -"मुनिवर ! अब मैं आपसे क्या छुपाऊँ ? मैं ही सूरज हूँ। अनजाने में मेरे कारण आपकी स्त्री को जो कष्ट हुआ है, उसके लिए आप मुझे क्षमा करें। "

सूरज को क्षमा माँगते देखकर जमदग्नि का सारा क्रोध ठण्डा हो गया। उन्होंने सूरज को मीठी छिड़की देते हुए कहा -"सूरज ! कैसे दुष्ट हो तुम ! जरा देखो तो, बेचारी रेणुका किस तरह को कुम्हला गई है। वह पसीने से तर-वतर हो रही है। पैरों में फोफले उठ गए हैं और मुख मुरझा गया है। तुम ही कहो मुझे क्रोध न हो तो क्या हो ?" तब सूरज ने मुस्कुराते हुए एक छत और एक जोड़ा जूता जमदग्नि के हाथ में रखकर कहा -"भगवन ! यह लीजिए। यह दोनों चीज बड़े काम की हैं। मैंने माता रेणुका के लिए उनकी सृष्टि की है। जूते पहन लेने से न पैर जलेंगे और न फोफले पड़ेंगे। छाता लगा लेने से धूप कुछ भी नहीं कर सकती। जो इनसे काम लेंगे, उन्हें मुझ से कोई कष्ट न होगा।" यह कहकर सूरज अन्तर्धान हो गए।

उसी दिन से पृथ्वी के मनुष्य छाते और जूते का इस्तमाल करने लगे ।
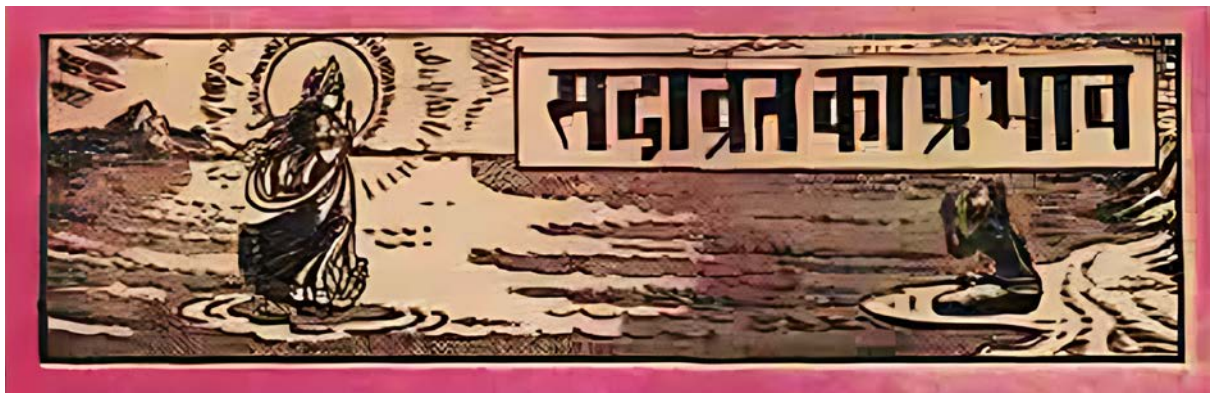
किसी गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। अगर कोई भूला भटका राही उसके घर आ जाता, तो वह उसकी बड़ी आव-भगत करता और बड़े प्रेम से खिलाता-पिलाता था। उसके घर से कोई भी दीन-दुखिया भूखा लौटता नहीं था। अगर किसी दिन संयोगवश कोई मेहमान उसके घर नहीं आता, तो वह खुद किसी को ढूँढ लाने को निकल जाता। इस तरह जब बहुत दिन बीत गए, तो एक दिन ब्राह्मण को यह जानने की इच्छा हुई कि इस तरह सदाव्रत करने का फल क्या होता है। उसने बहुत लोगों से पूछा; लेकिन किसी ने ठीक जवाब नहीं दिया।

एक दिन एक भले आदमी ने कहा -"सदाव्रत का फल बहुत अच्छा होता है। अगर तुम उसका रहस्य जानना चाहो, तो माता अन्नपूर्णा के मन्दिर में जाओ। माता के सिवा यह कोई नहीं बता सकता। इसलिए तुम वहीं जाकर पूछो।"

यह तो तुम जानते ही होंगे की माता अन्नपूर्णा काशी विश्वनाथ की पत्नी है और पार्वती इनका दूसरा नाम है। सदाव्रत बाँटने में, भूखे को अन्नदान करने में उनसे बढ़कर और कोई नहीं है। इसीलिए काशी में कोई भूखा नहीं रहता। लिहाज़ा ब्राह्मण काशी गया और गङ्गा किनारे बैठकर घोर तप करने लगा।

कुछ दिन बाद माता अन्नपूर्णा को उस पर दया आ गई। उन्होंने प्रकट होकर पूछा -"बोलो ! तुम क्या चाहते हो ?"

ब्राह्मण ने दण्डवत करके कहा -"माँ ! मैं और कुछ नहीं चाहता। सिर्फ इतना बता

दो की सदाव्रत करने का फल क्या होता है ? यह तुम्हारे सिवा और कौन बताए ?"

तब माता अन्नपूर्णा ने कहा - "सदाव्रत का प्रभाव तो पूरी तरह से मैं भी नहीं जानती। लेकिन मैं तुमको एक उपाय बताती हूँ, सुनो। हिमालय पर्वत के निकट हिमावत नाम का एक नगर है। उस नगर के राजा का कोई सन्तान नहीं है। तुम उस राजा के पास जाओ और उसे आशीष दो जिससे उसके सन्तान हो। राजा प्रसन्न होकर कहेगा - 'बोलो, क्या चाहते हो ? मैं तुम्हें मुँह-माँगी चीज दूँगा।' तब तुम उससे कहना -'हे राजा ! मैं इसके सिवा और कुछ नहीं चाहता कि जब तुम्हारे सन्तान पैदा हो तो एक बार मुझे दिखा दो। लेकिन एक शर्त है। जब मैं उसे देखने जाऊँ, तब वहाँ कोई न रहे। यहाँ तक कि तुम्हारी रानी भी नहीं।' राजा जरूर तुम्हारी बात मान लेगा। जब लड़का पैदा हो जाए और तुम उसे देखते जाओ तो तुम एकान्त में उस लड़के से पूछ लेना कि सदाव्रत का क्या प्रभाव होता है। वह तुम्हें बता देगा। " यह उपाय बता कर देवी अन्तर्धान हो गई

ब्राह्मण सीधे हिमावत नगर की ओर चल पड़ा। राह में उसे एक घने जङ्गल से होकर जाना पड़ा। जङ्गल में घुसते ही वह राह भूल गया और इधर-उधर भटकने लगा। इतने में एक भील ने सामने आकर पूछा - "ब्राह्मण महाराज ! मालूम होता है आप भटक गए हैं। कहिए आपको कहाँ जाना है। "

"मुझे हिमावत नगर जाना है।" ब्राह्मण ने जवाब दिया। "तब तो आप भटकते भटकते बहुत दूर चले आए। अब साँझ भी हो चली। यह जङ्गल बाघ, चीते आदि

खूँखार जानवरों से भरा हुआ है। इसलिए आप यहीं रुक जाइए। मैं कल सवेरे आपको रहा बताऊँगा।" भील ने कहा।

ब्राह्मण को भी उसकी बात जँच गई। वह भील के साथ चला गया। भील बड़ी चिन्ता में पड़ गया कि ब्राह्मण देवता को क्या खिलाए-पिलाए। वह उसकी तरह हरिण आदि का मांस तो खा नहीं सकते थे। इसलिए उसने बड़ी मेहनत से कुछ कन्दमूल जमा किए और ब्राह्मण के सामने लाकर रख दिए। ब्राह्मण ने किसी तरह अपनी भूख मिटाई और ठण्डा पानी पीकर भगवान का नाम लिया। भील की अतिथि सेवा देखकर उसे बड़ी खुशी हुई। वह अपना अङ्गोछा बिछाकर नीचे लेटने लगा। लेकिन भील ने उसे रोकते हुए कहा-"देवता ! नीचे ना सोइए। यहाँ आधी रात को बाघ और चीते घूमते फिरते हैं। आप ऊपर मचान पर चले जाइए।" यह कहकर उसने ब्राह्मण को ऊपर सुला दिया और खुद नीचे बैठकर रात भर पहरा देता रहा। रात बीतने पर थी कि बेचारे थके-माँदे भील की आँख लग गई। उसी समय एक बाघ

वहाँ आया और भील को मार कर खा गया।

ब्राह्मण की आँख खुली। भील को मारा देखकर उसे बड़ा दुख हुआ। उसने सोचा -"बेचारे ने मेरे लिए जान गँवा दी।" इतने में उसे भील की स्त्री ने आकर कहा -"देवता ! आप दुख न कीजिए। विधि का लिखा को मेटन हारा ? जो होना था सो हो गया। चलिए मैं आपको हेमावत की राह दिखा दूँ।" यह कहकर उसने ब्राह्मण को हेमावत नगर पहुँचा दिया और खुद वापस जाकर पति के साथ सती हो गई।

ब्राह्मण भील और भीलनी की सज्जनता पर अचरज करता हुआ हिमावत नगर पहुँचा।

वहाँ राजा के दरबार में जाकर उसने देवी के कहे मुताबिक राजा को आशीर्वाद दिया। राजा ने खुश होकर कहा -"बोलो, क्या चाहते हो ?" तब ब्राह्मण ने राजा को अपनी इच्छा बताई। राजा ने उसकी इच्छा पूरी करने का वचन दे दिया।

ठीक नौ महीने बाद रानी के यहाँ एक सुन्दर लड़का पैदा हुआ। यह खबर सुनते ही ब्राह्मण दौड़ा-दौड़ा राजमहल पहुँचा। रानी ने उसको ले जाकर बच्चे के पास छोड़ दिया और खुद कमरे से बाहर चली गई। एकान्त देखकर ब्राह्मण ने उस नवजात शिशु से पूछा -"सदाव्रत करने का क्या फल होता है ? बताओ तो। " उस बच्चों ने बड़ों की भाँति जवाब दिया -"आज से दस महीने पहले जङ्गल में आते-आते तुम भटक गए थे। तब एक भील ने तुम्हारी आव-भगत की और कन्दमूल खिलाए। मैं वही भील हूँ। मैंने तुम्हारे लिए जो छोटा सा काम किया था उसी के बदले इस राजा के घर में पैदा हुआ हूँ। इसी पुण्य के फल से कुछ ही दिनों में मैं राजा बनूँगा। जब सिर्फ एक बार मेहमान को कुछ कन्दमूल खिलाकर मुझे इतना फल मिला, तब जो रोज नियम से सदाव्रत करता है वह कितना पुण्यवान होगा ? खुद सोच लो। अब तुम समझ गए न की सदाव्रत करने का क्या फल होता है।" इतना कहकर वह बच्चा जोर-जोर से रोने लग गया।

ब्राह्मण की आँखें खुल गई। वह मन ही मन अचरज करता हुआ घर लौट आया और अपनी पत्नी से सारा किस्सा कह सुनाया। सुनकर उसकी स्त्री भी अचम्भे में पड़ गई। उस दिन से वे दोनों और भी लगन के साथ सदाव्रत बाँटने लगे।
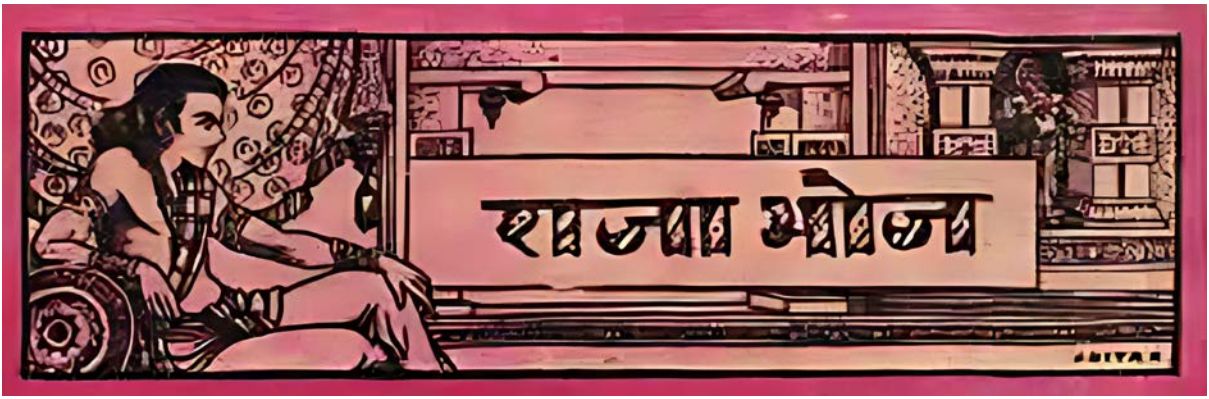
एक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। वह बड़ा विद्वान था। लेकिन उन दोनों विद्वानों की उतनी पूछ-कदर नहीं थी। इसलिए बेचारा ब्राह्मण गरीबी से छुटकारा नहीं पा सका। तिस पर उसका परिवार भी बहुत बड़ा था। बाल-बच्चे बहुत थे और कमाने वाला कोई नहीं था। आखिर एक दिन ब्राह्मण अपनी ज़िन्दगी से तङ्ग आ गया। वह घर में किसी से कहे-सुने बिना चुपचाप काशी की ओर निकल गया।

राह में बहुत से कष्ट उठाते वह ब्राह्मण किसी भाँति काशी जा पहुँचा। वहाँ एक-दो दिन आराम लेकर वह प्रयाग गया। तुम तो जानते ही हो कि प्रयाग को 'तीर्थराज' कहते हैं। वहाँ गङ्गा, जमुना, सरस्वती तीन नदियाँ मिलती हैं। उस जगह को 'त्रिवेणी सङ्गम' कहते हैं।

तीनों नदियाँ एक से एक बड़ी-चढ़ी और परम पवित्र हैं। उस सङ्गम में नहाने से जो पुण्य मिलता है उसका क्या कहना है ! जो जिस कामना से उस सङ्गम में प्राण छोड़ देता है, उसको दूसरे जन्म में वह चीज जरूर मिलती है।

इतना ही नहीं ; पुण्य लोभ से लाखों लोग दूर-दूर से वहाँ आते रहते हैं। वह सब बड़े प्रेम से त्रिवेणी में स्नान करते हैं। लोगों की देखा देखी उस गरीब ब्राह्मण ने भी त्रिवेणी में डुबकी लगाने का सङ्कल्प किया। उसने सोचा -"धन दौलत तो मेरे भाग्य में है ही नहीं। कम से कम कुछ पुण्य तो कमा लूँ। "

वह स्नान के लिए एक निर्जन घाट पर गया। वहाँ उसे चार सुन्दर लड़कियाँ दिखाई दी। वह भी शायद वही नहाने आई थी। उनकी सुन्दरता देखकर ऐसा मालूम होता

था, मानो देवलोक की परियाँ नहाने उतरी हैं।

ब्राह्मण उनको देखकर एक पेड़ की आड़ में छुप गया। वह देखना चाहता था कि यह क्या करने जा रही हैं। वे चारों लड़कियाँ नदी में उतरकर धीरे-धीरे गहरे पानी में जाने लगीं। यहाँ तक कि पानी उनके गले तक आ गया। तब ब्राह्मण चुप न रह सका। उसने जोर से चिल्ला कर कहा -"ऐ लड़कियों ! आगे न जाओ। नहीं तो डूब जाओगी।"

"डूबने के लिए ही तो आई हैं हम। यहाँ डूब जाएँगे तो अगले जन्म में हमारी इच्छाएँ पूरी होगी।" उन चारों ने हँसते हुए जवाब दिया। बेचारा ब्राह्मण अचरज में मुँह बाए खड़ा रह गया।

उन चारों में से पहले लड़की ने कहा -"हे भगवान ! लोग कहते हैं कि धन ही जगत का मूल है। गरीब आदमी की कहीं कोई कदर नहीं करता। इसलिए मैं चाहती हूँ कि अगले जन्म में मुझे धनवान घर मिले। पर यह कञ्जूस न हो। प्रभु, ऐसा वर दो कि मेरा पति धनवान हो ;साथ ही दान-पुण्य करने वाला भी हो। " यह कहकर वह लड़की डूब कर लापता हो गई।

दूसरी लड़की ने कहा -"भगवान ! रुपया सदा किसी के पास नहीं टिकता। लेकिन जो विद्वान होता है, वह धन और यश दोनों पाता है। इसलिए कृपा करके ऐसा वर दो कि अगले जन्म में मुझे महान पण्डित और कवि पति मिले। मैं इसके सिवा और कुछ नहीं चाहती।" यह कहकर वह भी त्रिवेणी में डूब गई। तीसरी ने कहा - "भगवान !

जब धन के साथ-साथ विद्या भी होती है, तो 'सोने में सुगन्ध' भी आ जाती है। लेकिन जब इन दोनों के साथ प्रभुता भी हो, तो फिर क्या पूछना ! इसलिए मैं अगले जन्म में एक ऐसे राजा की रानी बनूँ ,जो कुबेर सा धनी और ब्रह्मा सा विद्वान हो।" यह कहकर वह भी गहरे पानी में डूब गई।

फिर चौथी लड़की ने कहा -"भगवान ! जो देखने में सुन्दर नहीं, वह चाहे कितना ही धनवान और विद्वान हो कोई उसे प्रेम नहीं करता। इसलिए रूप ही अमूल्य धन है। मुझे अगले जन्म में ऐसा पति दो जिसका बदन कुन्दन की तरह दमकता हो। जिसका मुँह चन्द्रमा के समान हो और जिसका रूप देखकर कामदेव भी ईर्ष्या करें।" यह कहकर वह भी डूब गई।

उनको इस तरह डूबते देखकर ब्राह्मण के मन में तरह-तरह के विचार उठने लगे। उनकी हिम्मत देखकर उसने दाँतों -तले

ऊँगली दबा ली और निश्चय कर लिया कि एक न एक कामना करके वह भी डूब जाए। लेकिन वह निश्चय ना कर सका कि कौन सी कामना वह करे। उसने ज़िन्दगी भर गरीबी की मार सही थी। तो क्या वह अगले जन्म में एक लखपति बनने की इच्छा करे या उस कलमुँही औरत से पिण्ड छुड़ाने के लिए पतिव्रता पत्नी की माँग करे? इस भाँति वह बड़ी देर तक सोता रहा। पर कुछ तय नहीं कर सका।

इतने में ब्राह्मण को वे चारों लड़कियाँ याद आ गई। दुनिया में जितनी चाहने लायक चीज थी, अभी-अभी उन लोगों ने माँग ली थी। और अब बच ही क्या गया ? इतने में ब्राह्मण को एक बात सूझ गई। वह अङ्गोछा कमर में बाँधकर पानी में उतरा। उसने कहा-"भगवान ! मेरी एक ही इच्छा है। अभी जो चार लड़कियाँ पानी में डूब गई हैं, अगले जन्म में मुझे उनके पति बना दो। और मैं कुछ नहीं चाहता।" यह कहकर ब्राह्मण गहरे पानी में धँसा और डूब गया।

अपनी-अपनी कामना के अनुसार वे चारों लड़कियाँ अगले जन्म में चार राज भवन में पैदा हुईं। वह ब्राह्मण धार नगर के राजा सिन्धुल के घर पैदा हुआ। वही आगे चलकर राजा भोज के नाम से मशहूर हुआ। वह चारों लड़कियाँ कनकवाती, चन्द्रप्रभा, सुभाषिनी और पद्मवासिनी नाम से राजा भोज की रानियाँ बनी।

राजा भोज सा दानी, उनके समान धनी और उन सा विद्वान और कौन हो सकता है ?

एक समय वनकुमारी नामक एक सुन्दरी वाला थी वह। जैसी सुन्दरी थी बुद्धि भी उसकी वैसी ही पैनी थी। वह हमेशा समुद्र के किनारे नागकन्याओं के साथ खेलती रहती थी।

उसकी माता का नाम था बनदेवी। धरती पर सब तरह के पेड़-पौधे, बेल-बूटे बगैरह उपजाना उसी का काम था। उसी की आज्ञा से पेड़ों में फल लगते और पौधों में फूल। खेतों में धान उपजता और बाड़ियों में तरकारियाँ। उसी की कृपा से मैदान में मुलायम हरी-हरी घास बिछ जाती। उसका नाम भी इसी से बनदेवी पड़ गया था।

एक दिन बनदेवी ने अपनी लाडली बिटिया से कहा -"बेटी ! खेतों में धान पक गया है। कटाई के दिन आ गए हैं। मुझे अब कुछ दिन तक बिल्कुल फुर्सत नहीं रहेगी। रात दिन इन सुनहरे खेतों की रखवाली करनी होगी। इसलिए जब तक मैं लौट ना आऊँ, तू यहीं नागकन्याओं के साथ खेलता रह। देख, इनको छोड़कर इधर-उधर घूमने मत जा। "

"बहुत अच्छा माँ। तुम कुछ भी चिन्ता मत करो। मैं कहीं न जाऊँगी।" यह कहकर वनकुमारी नागकन्याओं के साथ खेलने चली गई। उसको देखते ही नागकन्याएँ दौड़ती हुई समन्दर से निकल आईं। वनकुमारी उनके साथ बालू के घरौन्दे बनाकर खेलने लगी। वह सब घरौन्दे बनाती और फिर तालियाँ बजाकर हँसती हुई उन्हें मिटा भी देती। नागकन्याओं ने कौड़ियों की एक माला बनाकर बनकुमारी के गले में डाल दी। बनकुमारी जब इधर-उधर दौड़ती, तो उसके गले में माला झूलने लगती।

थोड़ी देर तक खेलने के बाद बनकुमारी ने कहा -"बहनों ! आओ हम फूल चुनने

चलें। यहाँ से थोड़ी ही दूर पर एक बाग़ है। वहां रङ्ग -बिरङ्गे फूल खिले हैं। चलो हम फूल चुनकर सुन्दर माला गूँथे।" पर उसकी सखियों ने जवाब दिया -"नहीं बहन ! हम तो उधर नहीं जा सकती। हमें समन्दर का यह किनारा छोड़कर और कहीं भी जाने की मनाही है।"

"अच्छा, तो तुम सब यहीं रहो। मैं अभी आँचल भर फूल तोड़कर वापस आ जाती हूँ। यह कहकर बहुत दौड़ती हुई बाग़ की ओर चली गई। वहाँ पहुँचकर उसने रङ्ग-बिरङ्गे फूलों से अपना आँचल भर लिया और धीरे-धीरे लौटने लगी। इतने में उसे एक छोटा सा पौधा दिखाई दिया। उस पर सैकड़ो फूल लगे थे। उसे देखकर बनकुमारी बहुत ही प्रसन्न हुई। उसने चाहा कि उसे पौधे को जड़ से उखाड़ कर ले चले। बहुत जोर लगाने पर पौधा उखाड़ा। लेकिन उसे पौधे की जगह धरती में एक बड़ा छेद हो गया। उसमें से धड़ाके की आवाज सुनाई दी। पलक झपकते एक सुन्दर सोने का रथ उस क्षेत्र से ऊपर आ गया। उस रथ में तीन काले काले घोड़े जुते थे। उस रथ पर पातालपुरी का राजा बैठा था। यह सब देखकर वनकुमारी घबरा गई और 'अम्मा' 'अम्मा' चिल्लाने लगी। लेकिन अम्मा वहाँ कहाँ थी?

पाताल के राजा ने बना कुमारी का हाथ पकड़ कर अपने रथ में बिठा लिया और फिर बड़ी तेजी से अपने नगर को लौट गया। बनकुमारी को रोती-चिल्लाती देखकर उसने यूँ समझाया -"देखो ! अब रोने धोने से कोई फायदा नहीं है। आंसू पोंछ लो। मैं तुम्हें अपनी रानी बनाऊँगा। तुम जो चीज चाहोगी ला दूँगा। डरो मत। मैं कोई भूत थोड़ी हूँ जो मुझे देखकर इतना डरती हो?"

लेकिन मैं यहाँ एक पल भी रहना नहीं चाहती। मैं अपनी माँ के पास जाना चाहती हूँ। बनकुमारी ने सिसकती हुए कहा।

*   *   *   *   *   *   *

कुछ देर बाद जब वनदेवी समुद्र के किनारे लौटी, तो उनकी बेटी का कहीं पता नहीं था। जब उसने नागकन्याओं से पूछा, तो उन्होंने जवाब दिया -"फूल तोड़ने गई है। अभी तक लोटी नहीं।" यह सुनते ही बनदेवी का माता ठनका। उसे बड़ी चिन्ता हुई कि यह अल्हड़ लड़की न जाने किधर भटक गई। वह उसे ढूँढ़ने निकली। बेचारी ! उसे कौन बताता कि उसकी लाडली बिटिया कहाँ है। उसने हाथ में एक मशाल लेकर नौ दिन और नौ रात तक सारी धरती छान डाली। लेकिन सारी मेहनत बेकार।

खोजते खोजते राह में उसे एक जगह चन्द्रमा दिख पड़ा। पूछने पर उसने कहा -"मैं बनकुमारी का चीखना-चिल्लाना तो जरुर सुना था। लेकिन मुझे नहीं मालूम कि वह गई किस ओर है। हाँ, शायद सूरज से पूछो तो पता चले। क्योंकि दिन में जो कुछ होता है वह उसे छिपा नहीं

रहता।" बनदेवी ने तुरन्त सूरज के पास जाकर पूछा तो उसने जवाब दिया -"हाँ मैंने देखा कि पाताल का राजा उसे अपने रथ पर चढ़ा कर ले जा रहा है। लेकिन तुम कुछ सोच न करो। तुम्हारी बेटी का बाल भी बाँका न होगा। क्योंकि वह उसे प्यार करता है और अपनी रानी बनना चाहता है।" यह सुनते ही बनदेवी क्रोध से काँपने लगी। उसने गुस्से से भर कर कहा -"जब तक पाताल राज मेरी बिटिया को लाकर ना सौंप देगा, तब तक धरती पर पानी नहीं पड़ेगा। न कोई पेड़ फलेंगे। न फुल उगेंगे और न कोई अनाज ही पैदा होगा।" इतना कहकर आँसू

बहाती हुई वह वहीँ धरना देकर बैठ गई।

उस क्षण से धरती पर अकाल पड़ गया। पेड़ों के पत्ते पीले पड़ कर झड़ गए। यहाँ तक की मैदानों में हरियाली भी न रही। किसान एड़ी चोटी का पसीना एक कर देते, लेकिन खेतों में अनाज का दाना भी न उगता। चारों ओर हाहाकार मच गया और लोग भूख की आँच में तिल तिल कर स्वाहा होने लगे।

अब चारों ओर देवी देवताओं की पूजा होने लगी। लोग मन्दिर में जाकर 'त्राहि' 'त्राहि' करने लगे। देवताओं ने आकर वनदेवी से प्रार्थना की कि वह अपना शाप वापस ले ले। लेकिन वह टच से मस न हुई। हारकर उन्होंने बनकुमारी को लौटा लाने के लिए पाताल राज के पास अपने दूत भेजे।

* * * * * * *

उधर पातालराज बनकुमारी को खुश करने के लिए जी-जान से कोशिश कर रहा था। उसे आशा थी कि जरूर अन्त में वह उससे प्यार करने लगेगी। वह भँवरे की तरह उसके चारों तरफ मँडराता रहता और बार-बार मनाया करता। बनकुमारी जानती थी कि वहाँ कुछ भी खाने पीने से उसे उसका एहसान मानना पड़ेगा। इसलिए वह दाना पानी छोड़कर उसी तरह बैठी रही।

पाताल राज ने छप्पन प्रकार के ब्यञ्जन बनवाकर उसके सामने रखे। लेकिन उसने आँख उठाकर उधर देखा तक नहीं। वह कहती रही -"मुझे माँ के पास पहुँचा दो। मैं अपने बाग़ के फलों के सिवा कुछ नहीं खाती।" "अच्छा, तो तुम्हारे बाग़ के फल में यही मँगा देता हूँ।" यह कहकर

उसने अपने सिपाहियों को आज्ञा दी -"जाओ , धरती पर जितने तरह के फल मिले सब तोड़ लाओ। देखो देर न हो। पलक झपकते लौट आओ।" सिपाहियों ने जाकर सारी धरती छान डाली। एक-एक पेड़ उखाड़ डाला। लेकिन उन्हें फल तो क्या, दूर दूर तक कहीं एक हरी पत्ती भी न मिली। आखिर बहुत ढूँढने पर एक जगह उन्हें एक सूखा अनार मिला। उन्होंने उसे लाकर बन कुमारी के सामने रख दिया।

वह भूखी तो थी ही। झट से उसे फोड़ कर छः दाने मुँह में डाल दिए। इतने में देवताओं के दूत बनकुमारी को लिवा लाने के लिए वहाँ आ पहुँचे। पाताल राज ने उसे विदा करते हुए कहा -"बनकुमारी ! तुम लौट जाना चाहती हो, तो जाओ। लेकिन एक बात का ख्याल रखो। तुमने मेरे घर अनार के छः दाने खाए हैं। इसलिए तुम्हें हर साल छः महीने यहाँ आकर रहना होगा। "

अब वनकुमारी को अफसोस होने लगा कि उसने क्यों वे दाने खा लिए। आखिर लाचार होकर उसे पाताल राज की बात माननी पड़ी। जब वह

दूतों के साथ माँ के पास लौट आई, तो उसकी माँ ने उसे दौड़कर गले से लगा लिया। उसकी आँखों से आनन्द के आँसू बहने लगे। उसने अपना शाप लौटा लिया। तुरन्त पानी बरसा। धरती पर हरियाली छा गई। पेड़ों पर नई फोपलें निकल आई। फिर लताएँ फूलों से लद गईं।

पहले तो बनदेवी को यह मञ्जूर न हुआ कि उसकी लाडली बिटिया हर साल छः महीने पाताल राज के यहाँ जाकर रहे। लेकिन बनकुमारी के बहुत कुछ समझाने बुझाने पर वह भी राजी हो गई।

एक गाँव में एक गरीब आदमी रहता था। उसका इकलौता लड़का ब्याह के लायक हो गया था। लेकिन उसके जमीन-जायदाद कुछ न थी। इसलिए उसका ब्याह न हो रहा था। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, लड़के के माँ-बाप उस चिन्ता में घुलने लगे।

एक दिन वे गाँव के एक पण्डित जी के घर गए और हाथ जोड़कर बोले -"पण्डित जी महाराज ! हम लोग बड़े गरीब हैं। लड़का सायना हो गया है। लेकिन गरीबी के कारण उसका ब्याह नहीं हो पाता है। इसीलिए हम आपकी शरण में आए हैं। आप हमारा बेड़ा पार लगा दीजिए। जिस तरह हो, हमारे लड़के का ब्याह कर दीजिए। इसका भार अब आप पर ही है। पण्डित जी को उन वेचारों की बातें सुनकर दया आ गई। इसलिए उन्होंने उसे लड़के का विवाह करने का बीड़ा उठा लिया। पण्डित जी बड़े भले आदमी थे ,अच्छे विद्वान भी थे ,लेकिन थे बड़े भोले भाले ,दुनियादारी की बातों में बिल्कुल कोरे थे। वह उसी दिन से उस लड़के के लिए लड़की की खोज में दौड़-धूप करने लग गए। अब वह हमेशा उसके ब्याह की बात ही सोचते रहते। आखिर बहुत दिन तक चक्कर काटने के बाद एक गाँव में एक लड़की-वाला राजी हुआ। लेकिन उसने पहले एक बार लड़के को देखना चाहा। पण्डित जी ने उसकी बात मान ली।

लौट कर पण्डित जी ने लड़के के माँ-बाप से कह दिया कि लड़की वाले वर को देखने आ रहे हैं। लड़के के माँ-बाप बड़ी चिन्ता में पड़ गए। न लड़के के अङ्ग में कोई गहना था और न लड़के की माँ के पास कोई अच्छी साड़ी ही थी। आखिर लड़के की माँ पड़ोस के घर से अपने लिए एक अच्छी साड़ी और

लड़के के लिए एक सोने का हर माँग ले आई। ऐसी शुभ काम में कौन नहीं मदद करता ? उसने खुद नई साड़ी पहनी और लड़के को सोने का हार पहना दिया। फिर सज-धज के साथ लड़की-वालों की राह देखने लगी। ठीक समय पर लड़की-वाले आए। आदर सत्कार के बाद वे आसन पर बैठे और बोले -"यही लड़का है ?" पण्डित जी ने तुरन्त जवाब दिया -"हाँ, लड़का तो यही है। लेकिन एक बात सुन लीजिए। यह सोने का हर लड़के का नहीं है।" यह सुनते ही लड़की वाले समझ गए कि लड़का बहुत गरीब है और यह सोने का हर कहीं से माँग लाया है। उन्होंने नम्रता के साथ कहा कि वह घर जाकर खबर देंगे। ऐसा कहकर वह चलते बने।

बहुत दिन बीत गए। पर लड़की वालों के यहाँ से कोई खबर न आई। लोगों ने कहा कि यह सब पण्डित जी का दोष है। अगर उन्होंने सोने की हर की बात ना खोली होती तो शादी जरूर हो जाती। पण्डित जी को भी अब अपनी गलती मालूम हो गई।

बड़ी मेहनत के बाद ढूँढ-ढाँढ कर उन्होंने फिर एक जगह बात ठीक
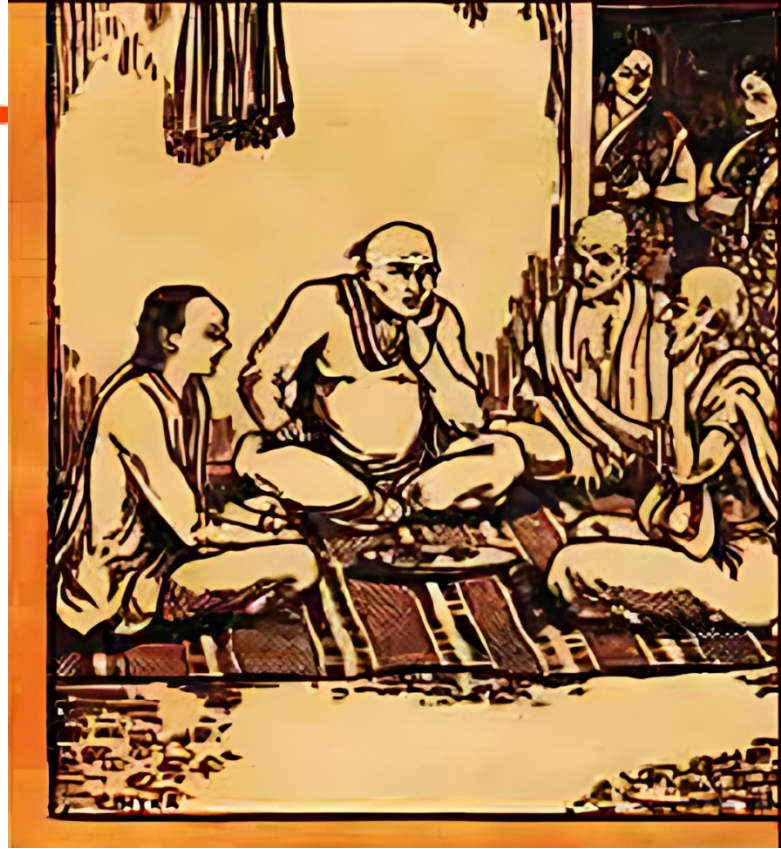
की। फिर वे लोग लड़का देखने आए। पण्डित जी ने सोचा कि पिछली बार सच बोलने से काम बिगड़ गया था। इसलिए इस बार झूठ बोलना चाहिए। उन्होंने लड़की वालों से कहा -"देख लीजिए !यही लड़का है और उसके गले में सोने का हार भी इसी का है।" यह सुनते ही लड़की वालों के मन में शक पैदा हो गया। उन्होंने कहा -"अच्छा ! घर जाकर हम आपको अपना निश्चय जाता देंगे।" यह कहकर वह अपनी राह गए।

लेकिन जब उनके यहाँ से भी कोई खबर न आई तो पण्डित जी को फिर फटकार सुननी पड़ी। बेचारे को यह जानकर बड़ा दुख हुआ कि उन्ही की बातों

ने इस बार भी बना बनाया खेल बिगाड़ दिया। इसलिए उन्होंने सोचा -"यह तो बड़ा बुरा हुआ। मालूम होता है ऐसे अबसर पर न झूठ बोलने से काम चलता है और न सच बोलने से। इसलिए इस बार ऐसी बात करूँगा जो न झूठ हो और न सच। देखूँगा इस बार कैसे नहीं काम बनता है ?" फिर उन्होंने लड़के के माँ-बाप के पास जाकर कहा -"कुछ चिन्ता न करो। इस बार मैं ऐसी कोई बात ना करूँगा जिससे काम बिगड़ जाए।" यह सुनकर उन्हें भी कुछ भरोसा हुआ।

पण्डित जी ने फिर एक जगह बात पक्की की। लड़की वाले फिर लड़के को देखने आए। उनकी खूब खातिरदारी हुई। जब सब लोग आसनों पर बैठ गए, तो पण्डित जी ने लड़के को दिखाकर कहा -"देखिए, यही लड़का है। ऐसा भाला लड़का आपको कहीं न मिलेगा। लेकिन सुनिए ! उसके गले में जो सोने का हार है, उसके बारे में न तो आपका पूछना ही उचित है और न मेरा जवाब देना ही।" उनकी बात सुनकर लड़की वालों ने समझा कि जरूर दाल में कुछ काला है। इसलिए उन्होंने कहा -"अच्छा ! हम घर जाकर आपको अपने निर्णय की सूचना देंगे।" ऐसा कहकर वह भी चले गए।

उनके चले जाने के बाद गाँव वालों ने पण्डित जी को खूब बड़े हाथ लिया। लड़के के गरीब माँ-बाप बहुत दुखी हुए। आखिर उन्होंने यह कहकर पण्डित जी से पिण्ड छुड़ा लिया -"पण्डित जी ! आपको सैकड़ो प्रणाम। आपने जो कुछ किया वही काफी है। अब आप कोई कष्ट न कीजिए। लड़के के भाग्य में जैसा लिखा है वैसा होगा।"

सैकड़ो बरस पहले की बात है। धार नगर में धरमू नाम का एक चमार रहता था। अपने भाई बन्धुओँ की तरह वह भी जूते बनाकर अपनी रोजी चलता था। वह उस गाँव की चौकीदारी का काम भी करता था। वह रात-रात भर जागकर पहरा देता और सारे शहर में गश्त लगाता। रह-रह कर चिल्ला उठता -"होशियार ! जागते रहो !"

इस तरह उसके दिन सुख से जा रहे थे। लेकिन उसे एक चिन्ता थी। उसके कोई बाल-बच्चे न थे।

इस शहर में एक पण्डित जी रहते थे। जब धरमू रात भर पहरा देकर घर लौटता, तभी पण्डित जी नहाने के लिए नदी पहुँचते थे। इस तरह दोनों में रोज भेंट हो जाती थी।

एक दिन धरमू ने पण्डित जी को प्रणाम करके कहा -"पण्डित जी! ऐसा आशीर्वाद दीजिए जिससे मेरे एक सन्तान हो।"

यह सुनकर पण्डित जी ने उससे कहा -"धरमू ! क्यों बेकार सन्तान की चिन्ता करते हो ? वह तो 'ऋणानुबन्ध रूपेण पशु, पत्नी सुतालयाः।' यानी पशु, स्त्री, बाल बच्चे, घर-बार सभी पहले जन्मों का कर्ज चुकाने आते हैं और कर्जा चूकते ही चले जाते हैं।"यह कहकर पण्डित जी नहाने चले गए।

पण्डित जी के उपदेश से धरमू का मोह तो नहीं मिटा। उल्टे एक उपाय सूझ गया। उसने सोचा -"अगर कोई मेरा माल खा ले, और बदले में मैं कुछ नहीं लूँ तो वह मेरा ऋणी बन जाएगा। तब तो अगले जन्म

रामचन्द्र वर्मा

में उसे मेरे घर पैदा होकर मेरा कर्ज चुकाना पड़ेगा। यह तो अच्छा उपाय सुझा।" यह कहकर धरमू मन ही मन बहुत खुश हुआ।

इसी ख्याल से अब धरमू जूते बनाकर हर किसी को मुफ्त में देना चाहता था। लेकिन लोग कहते -"हमें क्या पड़ी है जो मुफ्त का माल लेकर तुम्हारे कर्जदार बने ? बिना पैसा दिए जूते हम नहीं ले सकते।" ऐसा कहकर वे किसी दूसरे के यहाँ जूते खरीदने चले जाते थे।

कुछ दिन बाद जब धरमू ने देखा कि इससे कोई फायदा नहीं हुआ, तो उसने एक और उपाय किया।

उसने मन ही मन इस तरह सोचा - "हमारे शहर से नदी एक कोस दूर है। बीच में बालू का मैदान है। मैं एक जोड़ा जूता बनाकर बीच मैदान में रख आऊँगा। बहुत से लोग नंगे पाँव आते जाते रहते हैं। जब पैर जलेंगे, तो कोई ना कोई मेरे जूते पहन ही लगा। इस तरह मेरा माल खाकर वह मेरा कर्जदार बन जाएगा।" यह सोचकर उसने एक जोड़ा बढ़िया जूते बनाए और मैदान में रख आया। शाम तक उसने बड़ी बेचैनी के साथ समय बिताया। लेकिन शाम को जब उसने फिर मैदान में जाकर देखा तो जूते का जोड़ा जहाँ का तहाँ पड़ा था।

इस तरह दो-तीन दिन तक वह रोज शाम को जाकर देखता कि किसी ने जूता का जोड़ा उठा लिया है कि नहीं। लेकिन उसे बार-बार निराश होकर ही लौटना पड़ता था।

आखिर वह हिम्मत हार कर सोचने लगा कि शायद इस जन्म में उसे सन्तान का सुख मिलेगा ही नहीं।

लेकिन जब एक रोज शाम को उसने जाकर देखा तो जूते गायब थे। अब धरमू की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने सोचा कि आज मेरा नसीब खुला। तुरन्त उसने दौड़ते हुए घर जाकर अपनी औरत से यह खुशखबरी कही। उसे भी बहुत खुशी हुई।

लेकिन उनको यह नहीं मालूम था कि जूते किसने उठा लिए और न वे यह जानना ही चाहते थे।

एक दिन उन्हीं पण्डित जी को, जिन्होंने धरमू को उपदेश दिया था, किसी काम से पड़ोस के गाँव में जाना पड़ा। जब तक वे लौट पड़े तो दोपहर हो चुकी थी। पण्डित जी नंगे पाँव थे और जलती रेत में उनके पैर झुलस रहे थे। तलवों में फोफले पड़ने लगे थे। इतने में उन्हें राह में जूते का एक जोड़ा दिखाई दिया। उन्होंने इसे भगवान की कृपा समझ

कर जूते पहन लिए। फिर उन्होंने चारों ओर नजर दौड़ाई कि शायद जूतों का मालिक कहीं दिखाई पड़े। लेकिन जब कोई नहीं दिखाई दिया, तो उन्होंने सोचा कि शहर में जाकर पूछताछ करूँगा और जिसका यह जोड़ा होगा उसे दाम चुका दूँगा। यह सोचकर जूता पहने वह घर चले गए।

शाम को उन्होंने शहर के सभी चमारों से पूछताछ की। लेकिन किसी को इसकी खबर न थी। जब पण्डित जी ने धरमू से पूछा तो उसने भी साफ इनकार कर दिया।

पण्डित जी ने बड़ी कोशिश की कि जूते के मालिक का पता लगा ले और उसे दाम चुका दें। पर उनकी सारी कोशिशें बेकार हुई। अब पण्डित जी इसी चिन्ता में घुलने लगे। कुछ ही दिनों बाद बीमार पड़े और चल बसे। उन्हें उन जूतों का ऋण चुकाने के लिए धरमू के घर जन्म लेना पड़ा।

धरमू की स्त्री की कोख में एक चाँद सा बच्चा पैदा हुआ। उसे देखकर चमार-टोली के सभी लोग अचरज में आ गए। धरमू ने बड़े प्यार से उसका नाम रखा 'देवदत्त'। देवदत्त जब सायना हुआ, तो वह भी जूते बनाने लगा। लेकिन वह जो कमाता उसमें उसका बाप एक पाई भी न छूता था। उसको मालूम था कि अगर वह बेटे की कमाई में हाथ लगाएगा, तो उसका कर्जा चूक जाएगा। तब बेटा उसका नहीं रहेगा। इसलिए उसने अपनी औरत को भी चेता दिया था - "खबरदार ! देवदत्त के हाथ से तुम एक कौड़ी भी न लेना।"

देवदत्त को भी अपने पिछले जन्म का हाल मालूम था। उसे यह भी मालूम था कि क्यों उसे धरमू के घर जन्म लेना पड़ा है। इसलिए उस जूते के जोड़े का दाम चुका कर वह किसी न किसी तरह उऋण होना चाहता था। पर उसके माँ-बाप उसकी कमाई में से एक पाई भी नहीं लेते थे। इसलिए जितनी जल्दी वह चाहता था, उतनी जल्दी उसे छुटकारा नहीं मिला।

* * * * * *

एक दिन धरमू को किसी काम पर गाँव से बाहर जाना पड़ा। इसलिए उसने जाते समय अपने बेटे को बुलाकर कहा - "बेटा !

मैं एक जरूरी काम से बाहर जा रहा हूँ। इसलिए आज रात मेरे बदले तुम ही पहरा दे देना।

रात को देवदत्त अपने पिता की आज्ञा के अनुसार शहर में पहरा देने गया। वह अपने एक दोस्त को भी साथ लेता गया जिससे समय आसानी से कट जाए। दोनों शहर में गली-गली घूम कर पहरा देने लगे। जब एक पहर रात बीत गई, तब देवव्रत के दोस्त ने उससे कहा - "भई ! एक पहर रात बीत गई। अब एक बार हाँक लगाओ जिससे लोगों को मालूम हो कि तुम सो नहीं रहे हो।"

तब देवदत्त ऊँचे शोर से यह श्लोक पढ़ने लगा :--

"माता नास्ति, पिता नास्ति,

नास्ति बन्धु सहोदरः ।

अर्थे नास्ति गृहम् नास्ति,

तस्मात् जाग्रत ! जाग्रत ! "

श्लोक सुनकर उसका दोस्त अचम्भे में पड़ गया और बोला -"भाई ! इस मन्त्र का माने क्या है?"

देवदत्त ने कहा -"अरे भाई ! यह भी समझ न सके ! सुनो। माता-पिता बन्धु-बान्धव, धन दौलत और घर-बार कुछ भी अपने नहीं है। यह सब माया का खेल है। इसलिए होशियार रहो। यही इस श्लोक का मतलब है।"

इतने में दूसरा पर लगा। तब देवदत्त ने यह श्लोक पढ़ा :--

“काम क्रोधश्च लोभश्च

देहे तिष्ठन्ति तस्कराः ।

ज्ञानरत्नो पहाराय

तस्मात् जाग्रत ! जाग्रत !”

फिर दोस्त के पूछने पर उसने इस श्लोक का माने बताया -"काम, क्रोध और लोभ रूपी चोर इस देह में छिपकर ज्ञान रूपी रत्न को चुरा ले जाने के लिए ताक में बैठे हैं। इसलिए सावधान रहो।"

यह सुनकर उसके दोस्त को बड़ा अचरज हुआ और उस ने कहा -"भाई ! तुम्हारी बातें सुनकर तो मेरी अचरज का ठिकाना नहीं रहा। आज तक मैं माल-असबाब, रुपया पैसा चुरा ले जाने वाले चोरों का ही हाल सुना था। लेकिन ज्ञान रूपी रत्न चुरा ले जाने वाले इन निराले चोरों का नाम तो मैंने कभी नहीं सुना था। न जाने तुमने यह सब कहाँ से सीखा है ?"

इतने में तीसरा पहर हुआ और देवदत्त ने तीसरा श्लोक पढ़ा :--

"जन्म दुःखम् ज़रा दुःखम्

जाया दुःखम् पुनः पुनः ।

संसारं सागरं दुःखम

तस्मात् जाग्रत ! जाग्रत !"

दोस्त के पूछने पर उसने इस श्लोक का अर्थ बताया -"जन्म लेने में दुख है। बुढ़ापे में दुख है और स्त्री के साथ घर गृहस्ती चलाने में दुख है। यह संसार ही दुखो का सागर है। इसलिए होशियार।"

यह सुनकर उसके साथी ने कहा -"अरे ! उधर तुम्हारा बाप तो जल्दी से जल्दी तुम्हारी शादी करने की कोशिश में लगा है। इधर तुम बेदान्त बधार रहे हो। यह तो खूब रही।

इसका देवदत्त ने कुछ जवाब नहीं दिया। सिर्फ मुस्कुराया। इतने में चौथा पहर हो चला ।

तब देवदत्त ने यह श्लोक पढ़ा :--

"अस्य बाधते लोके

कर्मण्यां बहु चिन्तया ।

आयु क्षीणम् न जानाति

तस्मात् जाग्रत ! जाग्रत !"

यह श्लोक सुनकर उसका दोस्त मुँह बाए खड़ा रह गया। वह क्या जाने कि देवदत्त इतना बड़ा विद्वान कब से बन गया ! वह तो उसे एक मामूली चमार ही समझता था। तब उसने इस चौथे श्लोक का अर्थ पूछा।

देवदत्त ने बताया -"आशा, चिन्ता और कर्म इन तीनों से संसार बँध जाता है। इसमें फँसकर लोग यह भी नहीं जान पाते कि दिन-दिन उनकी आयु नष्ट हो रही है। इसलिए मैं लोगों को चेता रहा हूँ कि सावधान ! इनके जाल में न फंसना। यही है इसका अर्थ।

उस शहर के राजा को उस रात अच्छी तरह नींद न आई थी। उसने करवटें बदलते हुए देवदत्त की चारों श्लोक सुना। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसने मन ही मन सोचा -"यह कैसा चौकीदार है !यह तो बड़े-बड़े पण्डितों की भी कान काटता है।" इसलिए सवेरा होते ही उसने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया -"जाओ, उस पहरेदार को जिसने कल रात को यहाँ पहरा दिया था, बुला लाओ।" सिपाही लोग देवदत्त को बुलाकर राजा के पास ले आए।

उसे देखते ही राजा ने उसे प्रणाम करके कहा -"तुम कोई मामूली पहरेदार नहीं हो। तुम्हारे जैसा पण्डित तो मेरे राज भर में नहीं है।

तुम कृपा करके मेरी यह तुच्छ भेंट लो और मुझे आशीर्वाद दो। यह कहकर उसने देवदत्त को अशर्फियों की एक थैली देकर विदा किया।

पहले तो देवदत्त ने सोचा कि वह थैली लेने से इनकार कर दे। लेकिन कुछ सोचने विचारने के बाद उसने थैली ले ली। उसके मन में यह ख्याल हुआ कि शायद इससे पिता का कर्ज चुकाने में कोई मदद मिले।

दूसरे दिन धरमू गाँव से लौटा। देवदत्त सोचने लगा कि किस उपाय से थैली पिता को दे। उसे यह अच्छी तरह मालूम था कि उसके हाथ से धरमू कोई चीज नहीं लगा। उसे कोई सूरत नजर नहीं आ रही थी। इतने में चमार टोली में आग लग गई। सब लोग अपने घरों से माल-असबाब निकालने लग गए। देवदत्त भी अपने घर से माल-असबाब निकालने लगा। धरमू उन चीजों को उठा उठा कर दूर रख आता था।

इसी हड़बड़ी में देवदत्त ने वह थैली, जो राजा ने दी थी, पिता के हाथ में डाल दी। जल्दी में धरमू का भी ध्यान उस थैली की ओर नहीं गया। उसने सोचा कि वह भी घर की कोई चीज है। इसलिए विना सोचे समझे उसे हाथ में ले लिया और थोड़ी दूर पर असबाब के साथ रख आया।

जैसे ही धरमू ने वह थैला ले ली, देवदत्त का कर्ज चूक गया। अग्निदेव ने उसे अपनी गोद में छुपा लिया।

धरमू चिल्ला कर दौड़ा। पर उस थैली को देखकर ठिठक गया- "ओह! मेरा कर्ज तो उसने चुका दिया। " उसके मुँह में सिर्फ इतना ही निकला।

भोजन के समय किसान के लड़के ने पैरों से पड़कर वर्धमान को ऊपर उठा लिया और उसे उलट-पुलट कर देखने लगा। अब तो वर्तमान के होश उड़ गए। कहीं लड़के के हाथ से छूटकर गिर गया तो ? लेकिन खैर थी कि किसान के लड़के ने फिर उसे हिफाजत से नीचे रख दिया।

खाने पीने के बाद किसान की स्त्री ने वर्धमान को ले जाकर एक बिस्तर पर लिटा दिया। वर्धमान ने जब पलङ्ग के किनारे झुक कर नीचे झाँका तो उसका सिर चकराने लगा। उतना ऊँचा और लम्बा-चौड़ा पलङ्ग उसने आज तक नहीं देखा था। जल्दी ही वर्धमान को गाढ़ी नींद आ गई।

आधी रात के करीब एक बार उसकी नींद खुल गई। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। वह सोचने लगा -"हाय ! भगवान ! अब मेरा क्या हाल होगा। इन दैत्यों के बीच से मुझे कैसे छुटकारा मिलेगा ?" इतने में कोई भयानक आवाज आई और वह चौंक कर उस और देखने लगा। दो चूहे एक बिल से निकालकर उस कमरे में टहलने लगे।

वे चूहे हमारी भैंसे जितने बड़े थे। उनको देखकर वर्धमान घबरा गया। उसी समय एक चूहा उछाल कर उसके पलङ्ग पर चढ़ गया। वह कुछ देर तक वर्धमान की ओर टक लगा कर देखता रहा। फिर एकदम उस पर टूट पड़ा। वर्धमान ने म्यान से तलवार खींच ली और बड़ी होशियारी से पैंतरे बदल कर एक ऐसा वार किया कि चूहा लोटपोट कर ठण्डा हो गया। दूसरा चूहा घायल होकर भाग गया।

किसान ने बहुत सोच विचार कर अपनी छोटी लड़की चपला को बुलाया और वर्धमान को उसके हवाले कर दिया। वह लड़की नौ साल की थी। लम्बाई करीब पैंतीस फुट। लेकिन घर वाले उसे "नाटी" कह कर पुकारते थे। वह लड़की बड़ी सीधी-सादी थी। इसलिए किसान ने सोचा कि वर्धमान को उसके हाथ सौंप देने से उसे किसी तरह की तकलीफ न होगी।

"यह मेरा मुन्ना है। मैं इसे अपने नन्हे पलङ्ग पर लोरियाँ गाते हुए थपकी देकर सुलाऊँगी।" चपला ने अपने मन में कहा।

उसने उसे अपने खिलौने के नन्हे से पालने में सुला दिया और एक ऊँची ताक में छुपा दिया जिससे चूहा वहाँ तक ना पहुँच सके। दिन में तो चपला उसे हरदम साथ-साथ रखती। वह उसे अपने साथ हर जगह ले जाती। बार-बार अपनी हमजोलियों को दिखाती। वर्धमान को उसने उसे देश की बोली बोलना भी सिखा दिया। उसने उसके लिए अपने हाथों से एक पोशाक भी सीकर तैयार कर दी। वह पोशाक उसके गुड्डे गुड़ियों की पोशाक से कुछ बड़ी न थी। धीरे-धीरे यह खबर चारों ओर फैल गई कि चपला के पिताजी को कहीं से एक नन्हा सा जीव मिल गया है जो देखने में ठीक आदमियों की तरह है। बस, अब क्या था ! आस-पड़ोस के गाँव के लोग उसको देखने के लिए इस तरह आने लगे मानो कुम्भ का मेला हो। यह देखकर कुछ दोस्तों ने उस किसान को सुझाया "इस भुनगे को देखने के लिए इतने लोग आ रहे हैं। लेकिन बोलो तो, इसमें तुम्हें क्या फायदा हो रहा है। कुछ भी तो नहीं। सोचो, इसके जरिए तुम कुछ रुपए क्यों न कमा लो !" किसान ने

कहा "वाह ! यह तो तुमने अच्छा सुझाया। मैं जरूर ऐसा ही करूँगा।अफ़सोस तो यह है कि इतने दिन से यह सीधी सी बात मेरे दिमाग में नहीं आई। अगर मैं इसके देखने के लिए टिकट लगा दूँ, तो कुछ ही दिनों में मालामाल हो जाऊँगा।"

किसान ने उस रात अपनी छोटी लड़की को बुलाकर यह बात सुना दी और कहा -"देखो ! कल तड़के उठकर तैयार रहना। हम तुम्हारे मुन्ने को हाट में ले चलेंगे।"

चपला को यह अच्छा न लगा। वह नहीं चाहती थी कि उसके पिता उसके "नन्हे मुन्ने" को हाट में ले जाकर उसका तमाशा दिखाकर रुपया कमाए। वह जानती थी कि इसमें उसके प्यारे मुन्ने की हेठी है। उसे यह भी डर था कि देखने वाले उसे जरूर छेड़ेंगे और छड़ी या छाते से कुरेद कर उसके हाथ पैर तोड़ देंगे। लेकिन वह बेचारी कर ही क्या सकती थी ! उसने रोते हुए सारा हाल अपने मुन्ने को कह सुनाया। उसे उस समय अपने माँ-बाप पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। जब वे उसे हाट में ले जाकर तमाशा दिखाना चाहते थे, तो पहले ही क्यों ना बता दिया ? क्यों उसे लाकर उसके हाथ में सौंप दिया और कहा कि "लो, यह तुम्हारे लिए है।" ये हमेशा ऐसे ही करते हैं। पिछली बार भी उसका मन बहलाने के लिए एक बकरी का बच्चा खरीद लाए थे। जब दो-तीन महीने तक पालकर उसने उसे मोटा ताजा बनाया, तो उन्होंने बेच दिया एक कसाई के हाथ। कैसे आदमी है?

वर्धमान ने उसे ढाँढस बँधाते हुए कहा "चुप रहो। रोओ नहीं। इसमें मेरे लिए कोई खतरा नहीं है। मेरा भी इस देश को

और इस देश के आदमियों को देखने का जी चाहता है। तिस पर तुम तो हमेशा मेरे साथ रहोगी ही। तुम्हारे पिताजी मुझे अकेले तो ले नहीं जाएँगे। क्योंकि तुम्हारे सिवा मेरी देखभाल करना और कोई जानता नहीं। तो फिर डरने की बात क्या ?"

वर्धमान को भी यह अच्छा नहीं लग रहा था। लेकिन उसके मन में आशा हो रही थी कि इस घर से एक बार बाहर निकलते ही शायद बचकर भाग निकलने की कोई सूरत नजर आ जाए।

एक पेटी में मुलायम गद्दे बिछा कर वर्धमान के रहने के लिए कमरा सा बनाया गया। हवा के आने-जाने के लिए उसके चारों तरफ कुछ छेद बना दिए गए। उसके आगे की ओर एक दरवाजा काटकर उसमें किवाड़ भी लगा दिए गए। उस पेटी में वर्धमान को बन्द कर चपला और उसके पिता उसे अपने साथ लेकर एक घोड़े पर चढ़े और तड़के ही हाट की ओर चल दिए। उस पेटी में मुलायम गद्दों पर वर्धमान आराम के साथ बैठा हुआ था। चपला उसे

पेटी को खुद पड़े हुए थी। अब वह किसान भी वर्धमान पर बड़ा प्यार दिख रहा था। क्योंकि उसे आशा थी कि इसी के जरिए वह मालामाल हो जाएगा।

लेकिन जब घोड़ा दौड़ने लगा, तब तो वर्धमान को बड़ी तकलीफ हुई। एक-एक छलाँग से उसे ऐसा लगता था मानो हवा में उड़ा जा रहा है। जब उसका जहाज तूफान में फंसकर डाँवा-डोल हो रहा था, तब भी उसे इतनी तकलीफ न हुई थी।

आखिर वे तीनों किसी तरह हाट में पहुँचे। वहाँ एक धर्मशाला में उन्होंने एक कमरा किराए पर लिया और उसी में वर्धमान की प्रदर्शनी लगाई।

पलक झपकते सारा कमरा तमाशाइयों से खचाखच भर गया। कहीं सुई की नोक धरने की भी जगह बाकी न रही। लोग बहुत दिनों से इस मुन्ने के बारे में सुनते आ रहे थे। आज उन्हें उसे अपनी आँखों से देखने का मौका भी मिल गया।

चपला ने अपनी बोली में वर्धमान से कुछ सवाल किए। वर्धमान ने उसी बोली में जवाब दिए। उस नन्हे से आदमी को उनकी अपनी बोली में बातें करते देखकर सब लोग हँसने लगे। उनके अचरज का ठिकाना न रहा। उसके बाद वर्धमान उस मेज पर थोड़ी दूर तक चला। चपला ने एक छोटी सी कटोरी में उसे पानी पिलाया। उसने जैसे-जैसे कहा वर्धमान ने किया। उसके बाद उसने थोड़ी देर तक तलवार घूमा कर उन सब का मन बहलाया। इसके बाद चपला ने एक तिनका उसके हाथ में दे दिया। उस तिनके से वर्धमान ने तरह-तरह के तमाशे किए। यह सब देखकर हँसते-हँसते लोगों के पेट फूलने लगे।
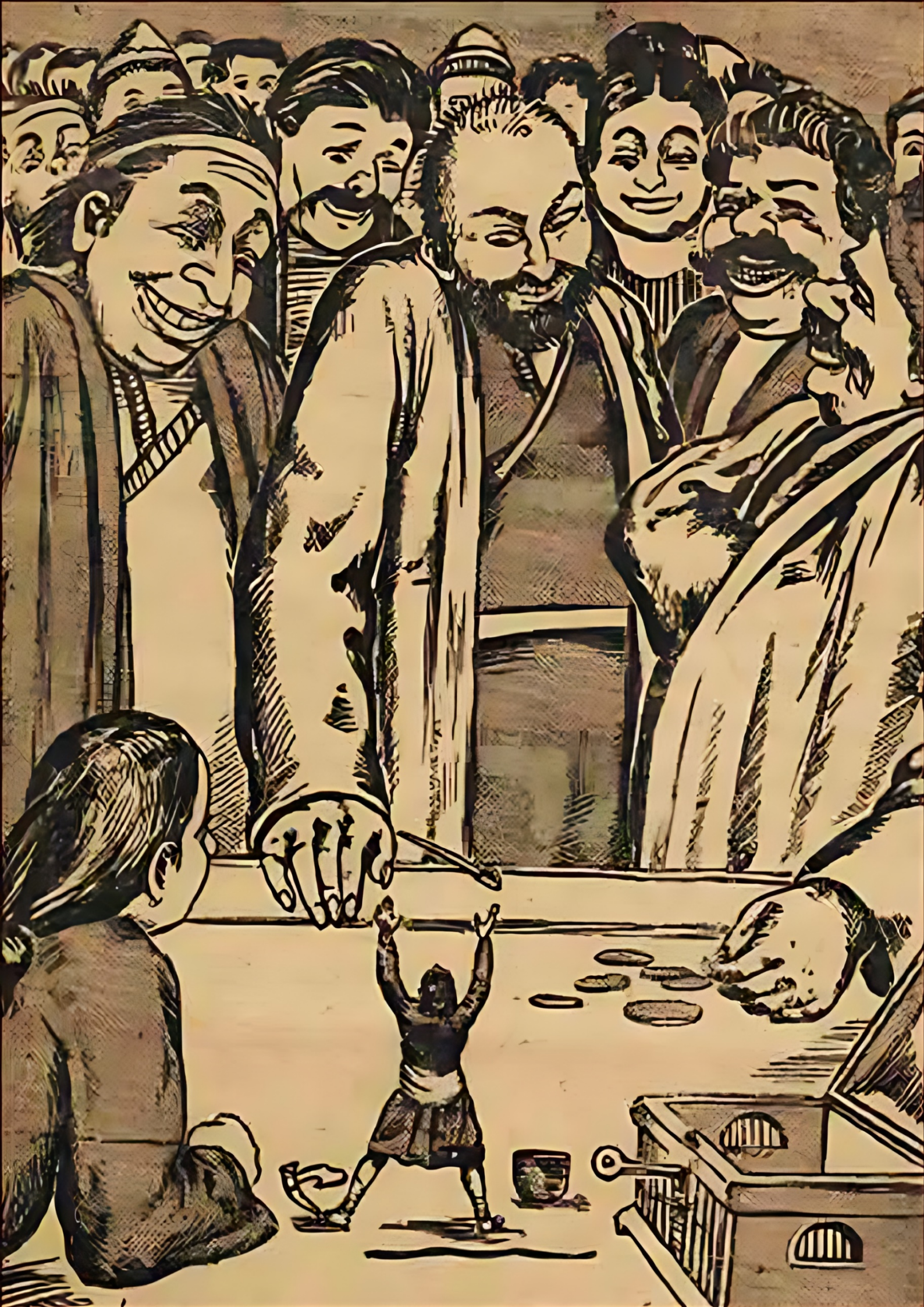
इस तरह वह किसान अब वर्धमान के जरिए खूब रूपया कमाने लगा। रुपए के साथ-साथ उसका लालच भी बढ़ता गया। अब वर्धमान की बड़ी खातिर होने लगी थी। चपला और उसके पिता के सिवा कोई उसके पास फटकने भी न पाता था। देखने वाले दूर से ही देखें; हाथ बढ़ाकर उसे छुए नहीं इसका अच्छा प्रबन्ध किया गया।

एक दिन एक नटखट लड़के ने मटर का एक दाना वर्धमान पर फेंका। खैर थी कि निशाना चूक गया। नहीं तो वर्तमान का सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाता। उस नटखट लड़के की ऐसी खबर ली गई कि फिर वह कभी इस तरह शरारत न करें।

अब हर रोज वर्धमान की प्रदर्शनी होती। हमेशा आने-जाने वालों का ताँता-सा लगा रहता। वर्धमान एक ही काम बार-बार करते-करते थक जाता। कभी-कभी तो बेहोश होकर गिर पड़ता।

अब उस किसान के दिन बड़े मौज से कटने लगे। घर में रुपए धरने की जगह न थी। इस मुन्ने के साथ-साथ मानो उसके घर में लक्ष्मी भी आ गई थी।

लेकिन किसान को इससे सन्तोष न हुआ। वह एक बारगी कुबेर बन जाने का उपाय सोचने लगा। उसने अपने मन में कहा -"देहातों में कितने दिन तक तमाशा करता रहूँ ? अगर राजधानी में जाकर राजा के दरबार में यह प्रदर्शनी करूँ, तो मेरा भाग्य खुल जाए। उस किसान ने अपनी स्त्री से भी सलाह मशवरा किया। उसके बाद चपला को बुलाकर कहा -"बिटिया रानी ! अगर हम अपने मुन्ने को राजा के यहाँ ले चलें, तो राजा रानी भी उसे देखकर बहुत खुश होंगे। फिर वह तुम्हें बहुत हीरे-जवाहरात, सोना-चाँदी भेंट देंगे। राजा के सामने तुम ही मुन्ने को दिखलाना। हम उसे छुएँगे तक नहीं। बोलो क्या कहती हो ?" [संशेष]

CHANDAMAMA (Hindi) January '60 Regd. No. M. 5452

हंस-युगल